आपातकाल में सृजन फुलवारी

प्रमिला मेहरा 'किरण'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

प्रमिला मेहरा 'किरण'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-126-8

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेंल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण- 2020 प्रमिला मेहरा 'किरण'

मूल्य- 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY PRAMILA MEHRA KIRAN

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेंरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेंशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की

आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	सेल्फी	6
2.	मेरे दुश्मन	7
3.	खास हो तुम	8
4.	ए सुनो न!	9
5.	सुकून	10
6.	खालीपन	11
7.	जननी हूँ मैं	12
8.	चाय	13
9.	मस्ती	14
10.	मेरी बेटी	15
11.	मिट्टी	16
12.	मिठास	17
13.	लॉकडाउन में	18
14.	बस यूं ही	19
15.	संस्कारों की विरासत	20
16.	कोरोना	21

सेल्फी

तड़पती हुई रूह,
घुटती सांसे,
अपने ही दायरे में सिमटी
कैद संस्कारों के पिंजरे में
छटपटाती,
लहुलुहान होती,
कभी इस कभी उस दीवार पर
अपना सर पटकती
और फिर कल के लिए
खुद को तैयार करती
खुद अपने ही आंसू पोंछ
आंखों पर लाइनर लगा
होठों पर मुस्कान सजा
खुद को सँवारकर
एक सेल्फी...!
और आप कहना
क्या खूब लगती हो
बड़ी सुंदर दिखती हो।

मेरे दुश्मन

दोस्त भी बनाकर देखे और दुश्मन भी,
पर दुश्मन को दोस्त से ज्यादा बेहतर पाया,

दोस्त
जब भी याद करते है
मुझसे बात करते हैं
और ज्यादा याद करते हैं, तो मिलने चले आते हैं,

पर दुश्मन तो कभी
भूलता ही नहीं
हर वक्त मेरी बातें
हर मिलने वाले से मेरा ज़िक्र और मेरे खिलाफ साजिशें,

बहाना कुछ भी हो
लेकिन प्यार निश्चित ही
सबसे अधिक मुझसे,
तभी तो उसे सोते जागते, हर पल मेरा ख्याल रहता है,

दुआ है
आज की सुबह
उस परमेश्वर से आपके लिए
ऐ मेरे दुश्मन आप हमेशा, स्वस्थ रहो मस्त रहो।

खास हो तुम

आज फिर सारी रात
आँखो में कटी,
ज़िद करता रहा
कभी रोता
कभी मचलता रहा
मेरी आँखे अब नींद से
बोझिल है
सारी रात जगा के
अब वो चैन से सो गया
पर अब तो मेरा
उठने का वक्त हो गया
गुस्सा आती है बहुत
पर मेरी जान हो तुम
सच कहती है दुनिया
तुम 'स्पेशल' हो
मेरे लिए बहुत खास हो तुम
'लव यू बेटू'

ए सुनो ना

सुनो!
लौटात में काजल ले आना तुम
और एक सुर्ख लिपस्टिक भी
उदास आँखें आसमान ताका करती हैं,
इनमें काजल लगाकर चमक बरना चाहती हूं,
सोचती हूं एक रंगीन लैंस भी मंगवा लूं,
रंगीन लैंस से दुनिया भी तो रंगीन दिखेंगी न
और सुर्ख लिपस्टिक ..
हां देखा है अक्सर खुद को मैंने
जब भी लिपस्टिक लगाती हूं
तो स्वत: ही आ जाती है मुस्कान चेहरे पर
वैसे श्रृंगार पूरा होता भी कहां है बिना मुस्कुराए
नारी सुलभ आदत जो है
आइने में खुद को
खूबसूरत देखकर कौन स्त्री नहीं मुस्कुराती
और यही तो चाहिए मुझे
अपनी उदास ज़िन्दगी को
मुस्कुराहट से भरना चाहती हूं
दरअसल मैं तुमसे
मुस्कान ही तो लाने को कहा रही हूं
सुनो!
लौटते में मुस्कान ले आना तुम
तुम समझ रहे हो ना?

सुकून

खुलते ही आँख
होंठ मुस्कुरा दिए
रजाई से बाहर निकली ही थी
कि कड़कड़ाती ठंड से बचाने
गुनागुनी धूप ने हाथ फैला दिए
मन शांत सा लगता है आज
अलसाई सुबह कुछ
खुशनुमा सी लगती है
उम्म्म.... कुछ ठीक से
याद तो नहीं आ रहा
पर लग रहा है जैसे कल रात
मां का सपना आया था
मां ने अपने सीने से लगाकर
थपकी देकर सुलाया था
बहुत सालों बाद आज चैन से सोई हूं
हाथ में गर्म चाय का कप है
वर्तमान को भूलकर बचपन में खोई हूं
बुलबुले सी है ज़िन्दगी
जाने कब किसकी आखरी सांस हो
दुआ है ये जो सुकून पल जो मैं जी रही हूं
हर इंसान को इस सुख का एहसास हो।

खालीपन

देखती हूं जब हथेलियों को
आँखें बरबस नम हो जाती हैं
आँसू की दो बूंद गिरती है
और हथेली भीग जाती है
मसलकर हथेलियों को
जब पोंछती हूं आँसू
बस एक ही ख्याल आता है
इंसान इस दुनिया से
क्या लेकर जाता है
खाली हाथ आया था
खाली हाथ जाता है
कितना भी कमा ले कोई
रुपया पैसा या अच्छा रिश्ता
फिर भी दिल के किसी कोने में
जो रह जाता है ना
वो... वीरान सा कुछ
शायद वही होता है
खालीपन!

जननी हूं मैं

अब निकली हूं मैदान में तो
कुछ करके ही आऊंगी
बताओ कितनी दीवारें हैं
मैं सबसे सर टकराउंगी
मगर रखना याद
जिस दिन मैं फौलाद बनी
किसी एक को नहीं
एक-एक को सबक सिखाऊंगी
और इंसानियत क्या होती है
जाओ ज़रा सीख कर आओ
ऐ औरत को कमजोर समझने वालों
ज़रा देखो खुद को
वजूद तुम्हारा मुझसे है
ठान लिया गर मैंने तो
कोख की मशीन से
मर्द का नामो-निशान मिटा दूंगी।

चाय

मैं हूं ना चाय सी
वैसा ही गहरा रंग है मेरा
किसी गोरे के पास खड़ी हो जाऊं
तो लगता है जैसे
दूध के पास चाय रखी है
वैसा ही कड़क स्वभाव है मेरा
उबलती रहती हूं देर तक
किसी भी बात पर
गुस्से में या दुख में
अदरक सी कुछ तीखी हूं
चाय पत्ती सी कुछ कड़वी भी
इलाइची सी महक भी है मुझमें
संस्कारों की
तो शक्कर सी मिठास भी रखती हूं
अपने पन की
कितनी समानता है ना
चाय ये और मुझमें
चाय सी मैं हूं या मुझ सी चाय
पता ही नहीं चलता
रच बस से गये है
चाय मुझमें और मैं चाय चाय में
इसीलिए खूब पीती हूं
आप भी पीया कीजिए।

मस्ती

ए.. सुन ना

चल छत पर चलते हैं

चल कुछ देर बैठ के बात करते हैं

तू मेरा दोस्त बन जा

मैं तेरी सहेली बन जाती हूं

कुछ नये पुराने गाने गाए

कुछ मस्ती मजाक करते हैं

और कुछ इस तरह

आज के दिन का अन्त करते हैं

मन हल्का हो कुछ मेरा तुम्हारा

चलो मुस्कुराकर गुड नाईट कहते हैं

मेरी बेटी

कभी लड़ती झगड़ती है कभी डरती मेरी बेटी।
कभी खुद आंख दिखलाए कि जैसे मां मेरी बेटी।

तेरे रूप में दुनिया की मैंने दौलतें पा ली,
महकता है मेरा जीवन के संदल है मेरी बेटी।

जब वो मुस्कुराती है बहारें झूम उठती हैं,
के जब वो ख़ोले मुह अपना तो कोयल कूक उठती है।

मेरी चुप को वो यूं झट से ऐसे पकड़ लेती है,
पकड़ कर नब्ज़ ढूंढ़े मर्ज मेरी संबल मेरी बेटी।

मिट्टी

बचपन में देखा था मां को
जब कोई मिट्टी की मूर्ति खंडित हो जाती
तो तुलसी कोट में रख देती थी
रोज पानी पड़ने से धीरे-धीरे
वह मिट्टी में मिल जाती थी
और एक दिन पता भी नहीं चलता था
कि वहां कोई मूर्ति भी रखी थी
ऐसे ही देखा मैंने मानव शरीर को
पांच तत्वों से बना उनमें मिट्टी भी एक
परमेश्वर ने प्राण फूंके खूबसूरत जिस्म दिया
कुछ बरसों तक खूबसूरती बढ़ती गई
लंबा चौड़ा शरीर मनचाहे तरीके से जीता रहा
और समय बीतने के साथ कमजोर होने लगा
पहले आंखों की रोशनी गई चश्मा लगा
फिर सुनना कम ताकत क्षीण होती गई
ईश्वर की बनाई हुई मूर्ति खंडित होती गई
और एक दिन हम खुद रख आए उसे
और रिश्तेदारों के साथ मिलकर
मिट्टी में मिल जाने को!

मिठास

तुम गुड़ मैं शक्कर सी, मिठास दोनों में भरी,
पर दिखते क्यों न एक से, तासीर भी जुदा-जुदा है।

तुममें हॉटनेस है, तो मैं भी कूल-कूल हूं,
अरे यूं कहूँ कि तुम गरम, मैं ठंडक से भरपूर हूं।

तुम कठोर डले से, यूं ऐसे टूटते नहीं,
छोटी-मोटी चोट को, तुम यूं ही झेल जाते हो।

मैं कोमल हृदया, धवल बारीक दानों सी,
पल में बिखर जाती कि पूरी न समेट पाए कोई।

फिर फेंक आती खुद ही, बिखरे आत्मसम्मान के टुकड़े,
रंग अलग रूप अलग, नीयत दोनों की नेक सी।

तुम गुड़ मैं शक्कर सी, मिठास दोनों में भरी,
पर दिखते क्यों न एक से, तासीर भी जुदा-जुदा है।

लॉक डाउन में

सड़कें सभी सुनसान हुईं, हर गली वीरान है।
मंदिर में घंटा ध्वनि, न मस्जिद में अज़ान है।

खुद को खुदा समझने वाले, चुप लगाके बैठ गए।
कुदरत से बड़ी कोई चीज़ नहीं, जान के वो हैरान हैं।

खूब कहते थे मेरा-मेरा, अब बता कौन है तेरा।
गले लगाना तो दूर उसका, मय्यत में आना हराम है।

कर रहा है ज़िद खूब, कुछ दिन से सब्ज़ी न दूध।
लाऊं कहां से कैसे समझाऊं, बच्चा मेरा नादान है।

न करो उत्पात अभी, घर में दुबक के बैठे रहो।
घर से हो पूजा नमाज़, अब यही धरम ईमान है।

बस यूं ही

कभी कभी मैं
कुछ अबूझ सी
कुछ अनकही सी
कुछ अनमनी सी

नहीं जानती
क्या सोच रही हूं
क्या कर रही हूं
क्यों जी रही हूं

आ जा रहे हैं
ये पल-दिन
ये आज-कल
ये रात-दिन

बस यूं ही
बिना किसी वजह
बिना किसी मकसद
बिना किसी आस

गुमसुम सी अनमनी सी
जीये जा रही है मेरे साथ
एक मात्र साथी मेरी
ये ज़िन्दगी, ये ज़िन्दगी, ये ज़िन्दगी!

संस्कारों की विरासत

दिल में मोहब्बत है पर शब्दों को शरम में रखती हूं।
तू मेरा है और बस मेरा है दिल को भरम में रखती हूं।

दे गये मेरे बुजुर्ग संस्कारों की विरासत,
दबा के अरमान अपने रिश्तों को चरम में रखती हूं।

कोई कहे कुछ भी खामोशियों में रहती हूं
पी कर सारा गुस्सा लहज़े को नरम में रखती हूं

कल मिला था राह में दिल तो धड़का था मेरा भी
पर गुस्से से देखा मैंने यूं जैसे फितरत गरम मैं रखती हूं

झूठ धोखे फरेब से भरी दुनिया से दूर रहती हूं
कैसे जीते हैं नहीं जानती बस इंसानियत करम में रखती हूं

कोरोना

ये भारत में कैसा मचा है कहर है, ये कैसी सज़ा!
के हर एक मानव घर में छिपा है, सहमा हुआ!

ना मंदिर में पूजा न होती अज़ाने
ये हिन्दू मुसलमान क्यों बैर ठाने
जो विपदा है आई, तो सुन लो न भाई
के हिल मिल हराएं मिटे कोरोना
ये भारत में कैसा मचा है कहर है, ये कैसी सज़ा...

अजब ये सिपाही रण में हैं उतरे
कोरोना वाइरस का सामना हैं करते
सफाईकर्मी, पुलिस, डॉक्टर, नर्सेज,
है इनको वंदन नमन है मेरा,
ये भारत में कैसा मचा है कहर है, ये कैसी सज़ा...

ये सारे जहां में छाई बीमारी
ये कुदरत का गुस्सा बना महामारी
यहां पशु पक्षी स्वच्छंद फिरते
मनुष्य अपने ही घर में ही बंदी बना
ये भारत में कैसा मचा है कहर है, ये कैसी सज़ा...

है माना अंधेरा मगर भोर होगी
है पतझर का मौसम फिर हरियाली होगी
हम दूरी बनाएं लॉकडाउन निभाएं
ईश्वर को मनाएं करें प्रार्थना
ये भारत में कैसा मचा है कहर है, ये कैसी सज़ा...
के हर एक मानव घर में छिपा है सहमा हुआ।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

आपातकाल में सृजन निराशा से दूर रखता है। कुछ समय अगर लेखन से दूर रहें तो विचारों में जंग सी लगने लगती है।अंतरा शब्दशक्ति की इस पहल ने विचारों को नित नए विषय देकर विचारों में चमक बनाए रखी। शुक्र गुजार हूं अंतरा शब्दशक्ति की जिसने हमें लेखन से जोड़े रखा।

लॉकडाउन के इस दौर में जहां चारों ओर निराशा व्याप्त है। अंतरा शब्दशक्ति ने लेखन में हमें जोड़ें रखा जिससे न केवल हम निराशा से दूर रहे बल्कि समाज को भी नित नए संदेश दे सके।

अंतरा शब्दशक्ति एक ऐसा नाम जो अपने उत्कृष्ट प्रयासों से हमेशा लेखन क्षेत्र में सबको जोड़े हुए है।

सप्ताह के सातों दिन निश्चित है लेखन की हर विधा के लिए। कोई दिन काव्य छंद गीत गजल तुकांत अतुकान्त रचनाओं के लिए तो कोई दिन कथा कहानी लेख संस्मरण के लिए।

गद्य और पद्य की हर विधा को सलीके से सँवारा है। अंतरा शब्दशक्ति ने हमें विषय देकर हमें लेखन में लगाए रखा और हमारे अंतर की शब्दशक्ति को निखारा है।

धन्यवाद अंतरा शब्दशक्ति, प्रीति समेकित दीदी और समस्त टीम का बहुत बहुत आभार

रचनाकार

प्रमिला मेहरा 'किरण'

इंदरा नगर,
रेल्वे स्कूल के पीछे, न्यू यार्ड
इटारसी (म.प्र.)

Email- pramilamehra1973@gmail.com
Mobile - 7000290983

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-126-8

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/